डॉ.र.ग.देसाई
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
श्री म.ग.कन्या महाविद्यालय,
सांगली ।

# प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.सुजाता रामचंद्र किल्लेदार ने मेरे निर्देशन में " श्री उदयशंकर भट्ट के " सागर,लहरें और मनुष्य उपन्यास का अनुशीलन " लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की एम्.फिल् (हिन्दी ) उपाधि के लिए लिखा है । यह कार्य पूर्व योजना नुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध छात्रा के कार्य से मैं पूर्णत: संतुष्ट हूँ ।

शोध-निर्देशक

(डॉ. र. ग. देसाई )

सांगली ।
तिथि । १ । ६ । १९९५ ।

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

## प्रख्यापन

"श्री उदयशंकर भट्ट के सागर, लहरें और मनुष्य उपन्यास का अनुशीलन" लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है जो एम्.फिल(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध छात्रा

SRKilledar

(कु.सुजाता रामचंद्र किल्लेदार)

कोल्हापुर।

तिथि। १ । ६ ।१९९५ ।

## प्राक्कथन

### प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय और उद्देश्य --

श्री उदयशंकर भट्ट एक श्रेष्ठ उपन्यासकार ,नाटककार,कवि,एकांकीकार माने जाते हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। उनके साहित्य में समाज जीवन का चित्र उभरकर आया है। उनके साहित्य में समाज के लिए उपयुक्त संदेश एवं समाज हित की बातों को दिया गया है। आपके ' सागर,लहरें और मनुष्य ' शीर्षक नामक आँचलिक उपन्यास का अनुशीलन ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य है।

श्री उदयशंकर भट्ट के आलोच्य उपन्यास पर शोधकार्य करने की प्रेरणा मुझे तब मिली जब मैंने एम.ए.की परीक्षा के लिए निर्धारित उपन्यास विधा के ' सागर,लहरें और मनुष्य ' उपन्यास को पढा। आपके इस आँचलिक उपन्यास ने मुझे अत्याधिक प्रभावित किया। उसी समय मैंने प्रस्तुत उपन्यास का विशेष अध्ययन करने का दृढ संकल्प किया। इस लघु शोध - प्रबन्ध के पृष्ठों पर मेरा वह संकल्प साकार हुआ है। और इस तरह मैंने " श्री उदयशंकर भट्ट कृत :" सागर, लहरें और मनुष्य " उपन्यास का अनुशीलन " विषय अपने लघु शोध प्रबन्ध के लिए रखा जिसमें मैंने प्रस्तुत उपन्यास के लेखक श्री उदयशंकर भट्टजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व यह प्रथम अध्याय लिया। द्वितीय अध्याय सागर,लहरें और मनुष्य उपन्यास में आँचलिकता ।तृतीय अध्याय उपन्यास की तत्वों के आधार पर समीक्षा। चतुर्थ अध्याय उपन्यास में चित्रित समस्याएँ और पँचम अध्याय उपसंहार का है।

" सागर,लहरें और मनुष्य " उपन्यास के अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में कुछ प्रश्न खडे हुए थे वे इस प्रकार है :--

(१) " सागर, लहरें और मनुष्य " में आँचलिकता का चित्रण किस तरह हुआ है ?

(२) " सागर, लहरें और मनुष्य " उपन्यास के द्वारा लेखक कौनसी बात स्पष्ट करना चाहते हैं ?

(३) मछुआरों के इस परिवारों में स्त्रियों को शिक्षा की सुविधा किस प्रकार दी जा सकती है ।

(४) मछुआरों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के हेतु क्या किया जा सकता है ?

(५) उनके व्यवसाय में उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयों के लिए सरकार उनकी कहाँ तक मदद कर सकती है ?

(६) " सागर, लहरें और मनुष्य " उपन्यास में मछुआरों का चित्रण करने में लेखक सफल हो गए हैं या नहीं ?

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध प्रबन्ध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया है ।

प्रथम अध्याय - " श्री उदयशंकर भट्ट व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय आवश्यक होता है । प्रस्तुत अध्याय में भट्टजी के जन्म और उनके व्यक्तित्व के अंतरंग और बहिरंग पहलू का विवेचन किया है । प्रस्तुत अध्याय को मैंने दो विभागों में विभाजित किया है --

(अ) जीवन परिचय ।

(ब) कृतित्व ।

भट्टजी के जीवन परिचय के अंतर्गत उनका जन्म तथा बचपन, उनकी शिक्षा-दीक्षा, उन्हे प्रभावित करनेवाले लोग, उनके अच्छे बुरे मित्र, उनका परिवार, उनके जीवन के सभी अच्छे-बुरे पहलुओंका विवेचन हो गया है । उनका पूरा साहित्य उसके लिए मिली प्रेरणा-प्रभाव आदि का विवेचन किया गया ।

कृतित्व के अंतर्गत - मव्यकृति,नाटक,एकांकी,उपन्यास का विवेचन ,संक्षेप में दिया है ।

द्वितीय अध्याय - " सागर,लहरें और मनुष्य" उपन्यास में आंचलिकता "

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत आंचलिकता का विवेचन किया गया है । इसमें अंचल शब्द का अर्थ,उत्पत्ती,और विकास बताया है । अंचल की परिमाषा में उत्पत्ती कोश,शब्द कोश,माषा कोश,और विद्वानों की परिमाषाएँ दी है । प्राप्त परिमाषाओं के आधार पर विशेषताएँ निश्चित की है । उपलब्ध विशेषताओं के आधार पर " सागर,लहरें और मनुष्य" उपन्यास का अनुशीलन किया है । इस अध्याय में आंचलिक उपन्यासों के प्रकारों को संक्षेप में दिया है ।

तृतीय अध्याय - " सागर,लहरें और मनुष्य " उपन्यास की तत्वों के आधार पर समीक्षा"

तृतीय अध्याय के अंतर्गत उपन्यास के तत्वों ,कथावस्तु,पात्र या चरित्र-चित्रण ,कथोपकथन,देशकाल,वातावरण,माषाशैली ,शीर्षक,उद्देश्य के आधार पर " सागर ,लहरें और मनुष्य" उपन्यास की समीक्षा की गई है ।

कथावस्तु -- इसमें प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में बताई है । कथावस्तु की विशेषताएँ देखी है । और कथा का प्रारंभ ,मध्य,अन्त,चरम बिन्दू आदि का विवेचन है ।

पात्र - चरित्र - चित्रण - इसमें चरित्र चित्रण की प्रणालियों का विवेचन है । पात्रों की विमाजन प्रमुख पात्र और गौण पात्रों के अन्तर्गत किया है । चरित्र - चित्रण कि विशेषताएँ दी है ।

कथोपकथन -- प्रभावपूर्ण कथोपकथन का विवेचन दिया है । " सागर,लहरें और मनुष्य" में दीर्घ तथा लम्बे,सुबोध सहज बाह्य संघर्षयुक्त,अन्तर्द्वन्द्वयुक्त प्रेम मावना से युक्त,छोटे-छोटे संक्षिप्तता से युक्त,गति शील आदी संवादो का विवेचन दिया है । प्रस्तुत अध्याय में कथोपकथन की विशेषताओं को दिया है ।

देशकाल वातावरण - परिवेश समय और वहाँ का वातावरण आदि का विवेचन

इसमें है। इसमें बरसोवा का अंकन किया गया है। धार्मिक सांस्कृतिक,उत्सव,पर्व, त्यौहार ,नारियल पूर्णिमा,होली,महाभारत एवं सत्यनारायण की कथा का आयोजन,खण्डोबा की पूजा,सामूहिक नाच गाण का वर्णन आया है।

भाषा- शैली --

भाषा - बरसोवा में स्थित लोगों की बोलीभाषा और मिश्र हिन्दी एवं बम्बईयॉ हिन्दी भाषा का प्रयोग हो गया है।

शैली -- प्रस्तुत उपन्यास की शैली प्रभावपूर्ण एवं सफल रचना शैली कही जा सकती है।

शीर्षक -- शीर्षक छोटा होकर अच्छा रहा है। प्रस्तुत शीर्षक मछुआरों की व्यक्तिगत विशेषताओं और उनका समस्त जीवन प्रस्तुत करने में समर्थ हो गया है।

उद्देश्य -- प्रस्तुत उपन्यास में वर्तमान सभ्यता के दुष्परिणामों को वर्णित किया है।

चतुर्थ अध्याय - " सागर,लहरें और मनुष्य" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ " --

इस अध्याय के अंतर्गत बरसोवा अंचल के लोगों के जीवन में स्थित सभी समस्याओंका उल्लेख आ गया है। वो समस्याएँ निम्न प्रकार की है। -- १) व्यावसायीक समस्या २) आर्थिक समस्या ३) प्रेमविवाह की समस्या ४) अवैध यौन सम्बन्ध ५) जातिवाद की समस्या ६) राजनीतिक समस्या ७)शैक्षणिक समस्या (८) सुधार की दिशा आदि का विवेचन दिया है।

पंचम अध्याय -- उपसंहार नामक पंचम अध्याय के अंतर्गत पूर्व विवेचित अध्यायों की सारी बातें संक्षेप में दी गई है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को संपन्न बनाने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है --

ग्रंथालय - शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर।

ग्रंथालय - श्री.म.ग.कन्या महाविद्यालय,सांगली।

इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं इन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनकी सृजनात्मक

और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोध कार्य में किया है।

शोध कार्य के संकल्प की पूर्ति श्रध्देय गुरुवर डॉ.र.ग.देसाई,अध्यक्ष हिन्दी विभाग, श्री.म.ग.कन्या महाविद्यालय,सांगली के कृपापूर्ण, मार्गदर्शन का फल है। तथा मेरे गुरुवर्य डॉ.वसंत केशव मोरे जी,डॉ.पी.एस.पाटील जी और डॉ. अर्जुन चव्हाण जी आपके सहयोग से ही यह कार्य संपन्न हुआ है।

आपके गहरे अध्ययन का मैंने पूरा लाभ उठाया है। इन ऋणों के प्रतिदान में आभार या धन्यवाद जैसे शब्दोंसे ऋण मुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। गुरुवर के पुनीत चरणों में नतमस्तक होने के अलावा मैं कर ही क्या सकती हूँ ? भविष्य में भी आपके ऋण में रहने में मुझे संतोष होगा।

अपने जीवन का हर कार्य मुझे मेरे माता-पिताजी के बिना अधूरा महसूस होता है। मेरा यह कार्य भी माता - पिता के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ है।

इस लघु शोध - प्रबन्ध का टंकलेखन कोल्हापुर के श्री बाळकृष्ण रा.सावंत ने उत्तम और बडी तत्परतासे कर दिया इस लिए मैं उनकी आभारी हूँ।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे सहृदयों एवं स्वजनों प्रा.सुनिल बनसोडे, अरुण गंभिरे, प्रा.आण्णासाहेब कांबळे, चत्तुर्भूज गिड्डे, अजय सावळवाडे, गिरीश जगताप, उदयसिंह राजे-भोसले, भारत कुंभेकर,रामचंद्र लोन्ढे, कु.गीता भोसले, कु.शारदा राऊत, कु.अपर्णा पाध्ये इन लोगों ने मेरी सहाय्यता की है। अंत में उन सब का आभार मानकर विनम्रतासे विद्वानों के सामने मैं इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध - छात्रा

( कु. सुजाता रामचंद्र किल्लेदार )

कोल्हापुर।

तिथि ।१।६।१९९५।